## बच्चों की अपनी अभिव्यक्ति

# हम उड़ान भरेंगे....

## अम्बेदकर प्रेरणा दल

### बिहार दलित विकास समिति

# बिहार दलित विकास समिति
# पटना

## द्वारा

# अम्बेदकर प्रेरणा दल

## बच्चों का एक सशक्त संगठन

## शीर्षक 'उड़ान'

## (भाग–प्रथम)

संकलनकर्त्ता : राजकुमार
प्रकाशन : नवम्बर, 2023

**सहयोग राशि ₹ 15/-**

बच्चों की यह पत्रिका उनके द्वारा लिखी गई अपनी निजी अभिव्यक्ति है जिसका उद्देश्य बच्चों में शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा एवं उनके छुपे प्रतिभाओं को सामने लाने हेतू है।

यह निजी और संरक्षित पत्रिका ए.पी.डी. के बच्चों के लिए है।

# निदेशक की कलम से

प्रिय बच्चों,

जय भीम,

प्यारे बच्चों, 2023 बीत गया और 2024 का आगमन हो गया है। पुराने साल की विदाई और नये साल की स्वागत करते हुए ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं आप सबों के बीच आप सबकी लिखी गई अभिव्यक्ति ''हम उडान भरेगें'' को सहृदय भेंट कर रहा हूँ। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि आप सब अम्बेदकर प्रेरणा दल के सदस्य है और बाबा साहेब अम्बेदकर के मूल सिद्धातों को मान कर आगे बढ़ रहे हैं। बाबा साहेब हम सबों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत है। हमारे कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत अम्बेदकर प्रेरणा दल का गठन कर बच्चों में शैक्षणिक एवं नैतिक मूल्य, नेतृत्व क्षमता का विकास, समाजिक समता तथा दलितों के प्रेरणादायक सभी महान व्यक्तियों के जीवनी से सीख लेकर आगे बढ़ाया जा रहा है। बाबा साहेब के जीवन से हम सबों को एक नई ताकत एवं ऊर्जा मिलती है।

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि छोटे-छोटे बच्चों द्वारा संकलित कविताएँ, कहानियाँ चुटकुले इत्यादि से एक पत्रिका बनाया गया है। यह प्रथम संस्करण हैं, जो आप सभी बच्चों के लिए एक गर्व की बात है। बिहार दलित विकास समिति बच्चों के लिए एक ऐसा मंच बनाया है, जिस पर अपनी मन की भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं और अपनी पहचान बना सकते हैं। ए.पी.डी के संकल्प नारे और बाल अधिकार जैसे विषयों को पहचान कर आप स्वयं रचनाएँ करते रहें ताकि आपकी प्रतिभा एवं पहचान समाज में बढ़ते रहें और अपना जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

सभी बच्चों को प्यार एवं आशीर्वाद

निदेशक

**फादर जोस**

बिहार दलित विकास समिति, पटना

# 1.कविता

छत से टप–टप बूंदें गिरें,
जिन्दगी मुसीबत से घिरे।
पर हम इससे क्यों डरें,
लड़ना है, हमें इससे डट के लड़ें।

झरना बहे झर–झर,
पंछी उड़े फर–फर,
चलो शिक्षा हम पहुँचायें घर–घर।

सारिका सोरेन, वर्ग-7, मधेपुरा

**हम चले साथ में,**
**खो गये किसी रात में,**
**घुमना-फिरना पक्षियों का काम,**
**पढ़ना-लिखना हम बच्चों का काम ।।**

रीना कुमारी, वर्ग-8, गांव-अदलीपुर, पटना।

## 2. बाल विवाह

**आज फिर दो नन्ही जिन्दगी को रूलाया गया**
**बर्बादी के मालों को उनके गलों में डाला गया**
**अभी तो कलम पकड़ना सीखा भी नहीं था**
**की शादी के कार्ड उसी कलम से छपवाया गया**
**आज फिर दो नन्ही जिंदगी को रूलाया गया।**

बाल अधिकार महोत्सव - दरभंगा

# ३. बदलाव से सामाजिक पहचान

मेरा नाम अरबिन्द कुमार है। मेरे पिता जी का नाम रामचरण सदाय है। मैं सोनकी, थाना सोनकी, जिला दरभंगा का रहने वाला हूँ। मैं 2020 में ए. पी. डी. के सदस्य बना था। पर मैं कुछ भी इसके बारे में नहीं जानता था। मुझे समझ में भी नहीं आता था। किन्तु जब मैं ए. पी. डी. के बैठक में भाग लेने लगा तो मुझे समझ आया कि मैं सही जगह पर आता हूँ। मेरा समाज सबसे नीचे स्तर का है, उसके पास न शिक्षा, न घर, न अच्छे वस्त्र, न सामाजिक पहचान है। ये सभी मेरे पास भी नहीं है। ए पी डी की सोच ने मेरी राह आसान कर दिया। मैं पहले बहुत कम बोला करता था। पढ़ाई के प्रति रूचि नहीं थी। जब मैं धीरे–धीरे ए. पी. डी. के बैठक में भाग लेने लगा तो आँखों पर बंधी पट्‌टी खुल गयी। मेरे साथी आज भी पढ़ने से कतराते है किन्तु मैं रोज स्कूल जाता हूँ, और पढ़ाई कर रहा हूँ। ये सभी प्रेरणा ए पी डी के द्वारा ही मिली है।

आज मैं खुश हूँ कि हम अपनी बातों को दूसरों तक पहूंचा सकता हूँ। अभी मुझे ए. पी. डी. के नाम से कहीं बुलाया जाता है तो मैं वहीं चला जाता हूँ। मैं समझता हूँ कि जाने से मुझे ज्ञान मिलता है। माह में दो बार प्रतियोगिता करवाना मेरे लिए बहुत ही उपयोगी है। मेरे पास ए. पी. डी. में आने के पहले जी.के. के बारे में जनाकारी नहीं थी, तथा समझता भी नहीं था। किन्तु आज मेरे पास जी.के. की जानकारी है। मैं डॉ भीम राव अम्बेडकर तथा बाल अधिकारों के बारे में कुछ नहीं

जानता था, किन्तु ए. पी. डी. का देन है कि मुझे ऐसे महान व्यक्ति के बारे में जानकारी मिली। बाबा साहेब ने जो दलित समाज के लिए किया उसे ए. पी. डी. के माध्यम से हम जैसे बच्चों को जानकारी दी जाती है। ए.पी.डी. से विशेषकर मुझ में बदलाव देखने को मिल रहा है। मैं अपनी पढ़ाई ठीक से कर रहा हूँ। इस तरह मेरे जीवन में काफी बदलाव आया जिससे मेरी एक समाजिक पहचान बनी।

अरबिन्द कुमार
ग्राम–सोनकी
जिला– दरभंगा

## 4. नई पहचान

जिनसे मिला भारत को एक नया विधान
जिन्होंने भारत को दीं एक नई पहचान ।
जिसने रच डाला देश का संविधान,
वो है बाबा साहेब महान ।
उन्होंने सबको साथ चलना सिखाया ।
सबको अपने अधिकारों से अवगत कराया ।
दिया जिन्होंने एक नया हिन्दुस्तान
वो है बाबा साहेब अम्बेदकर महान ।
उन्होंने बढ़ाया देश का मान,
वह है सबका अभिमान ।
जिसने दिया भारतीयों का समान अधिकार
वो है बाबा साहेब महान।

# 5. अभियान की सफलता

## जीवन को नई रोशनी

मैं लाछो कुमारी पिता लगन चौधरी, ग्राम लोदीपुर, मछुआटोली, मनेर, पटना का रहने वाली हूँ। मेरी आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। मैं अपने नाना–नानी के साथ रहती हूँ। मेरी परवरिश नाना–नानी करते हैं और साथ– साथ मेरी माँ भी नाना के घर में ही रहती है जिससे उनका गुजारा हो रही है। मैं अपनी मामी के कामों में हाथ बटाती हूँ। मेरी मामी के बच्चे सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते हैं जिससे मेरा मन भी स्कूल जाने को करता है। किन्तु मैं चाह कर भी पढ़ने नहीं जा सकती थी। मुझ पर किसी का ध्यान ही नहीं जाता था। इसी बीच जीवधारा संस्था की संचालिका सिस्टर सोनी मेरे परिवार के पास आती है और हम सब का नामांकन सरकारी स्कूल में कराने की सलाह देती हैं। और उनकी बात मानकर मेरी नानी ने सरकारी स्कूल में नाम लिखवा दिया। मैं उस समय चौथी वर्ग में पढ़ रही थी। तभी चन्द्रशेखर सर ने मेरा नाम अम्बेडकर प्रेरणा दल (ए. पी. डी.) में जोड़ दिया और मैं ए. पी. डी. के सक्रिय सदस्य बन गई और ए. पी. डी. के बैठक में भाग लेने लगी तथा समय–समय पर प्रतियोगिताओं के माध्यम से बहुत तरह की जानकारी मिलने लगी।

ए. पी. डी. से जुडने के बाद मुझे अपने मामा के शराबी होने की जानकारी मिली। मैं जानती थी कि शराब एक नशा है जो बहुत ही खराब है। इसकी लत लग जाने पर परिवार तंग और तबाह हो जाता है। देर रात आना तथा पीकर रास्ते में गिर जाने पर दूसरे लोग आकर उसकी सूचना देते थे और हम सब जाकर उनको पकड़कर लाते थे। इस तरह उनकी रोज की दिनचर्या बन गई थी। मेरी मामी बहुत ही परेशान हो गई, बहुत तरह की ईलाज करवाई किन्तु मामा ऊपर किसी प्रकार का असर नहीं पड़ा और आदत बढ़ती ही चली जा रही थी। मैं बहुत निराश हो गई थी कि मैं अब क्या कर पाऊँगी। शायद मेरी पढ़ाई छूट जायेगी आदि।

एक दिन ए. पी. डी. की बैठक में नशा तथा बाल श्रम के बारे में बताया गया, जिसमें 1098, तथा 112 नम्बर मिली। मैंने उन लोगों से भी बात की जो शराब बेचते थें और कहा कि जो मेरे मामा को शराब पिलायेगा उसके बारे में पुलिस को बता दूँगी। यह सुनकर शराब बेचने वाले मुझे डाँट कर भगा दिया। लेकिन मैं उससे डर कर बैठ नहीं गई। एक दिन 112 पर पुलिस को कॉल किया तो पुलिस आई किन्तु सभी भाग गये । मुझे मामा और अन्य लोग डाँटने लगे। एक दिन ए. पी. डी. के बैठक में सभी सदस्य यह निर्णय लिया कि हम सब को शराब पर एक जागरूकता अभियान चलाना है। अपने गाँव में घर–घर जाकर सबों को समझाया कि शराब पीने से क्या हानि होगी तथा घर बर्बाद हो जायेगा आदि। यह भी बताये कि जो शराब बेचेंगे तथा पीयेंगे उसे पुलिस से पकड़वा देंगे। हम सबों ने ऐसा ही किया और बहुत सुधार देखने को मिला। मेरी बात मानकर मामा अब बहुत ही कम शराब पीते हैं और मुझे एक अच्छा तथा होशियार लड़का समझने लगे। मैं ऐसा मानती हूँ कि यदि मैं ए. पी. डी. के सदस्य नहीं होती तो इस तरह के कार्य करने की प्रेरणा नहीं मिलती।

लाछो कुमारी, वर्ग–7,

जिला– पटना

# चुटकुला

एक लड़का आधी रात को डॉक्टर को फोन किया।

फोन की घंटी बजती है ट्रिंग–ट्रिंग

लड़का– डॉक्टर साहेव

मुझे नींद नहीं न आने बिमारी है

डॉक्टर साहेव–तो अवे इसे फैला क्यों रहे हो कम से कम मुझे सोने तो दो।

# 7. छिलके की अदालत

एक बार छिलके आम साहेब और प्याज खाँ में बड़ी जोरदार झगड़ा हो गयी। एक दूसरे पर झपट रहा था। छिलके आम साहेब के पैर में तथा प्याज खाँ के आँख में चोट लग

गई। लीची राम दोनों के बीच में बडी मुश्किल से बीच बचाव किया। ककड़ी नाई चौकीदार ने खतरा देख फौरन दरोगा भिन्डी राम को फोन किया। दरोगा भिन्डी राम ने हैट लगाकर दो सिपाही नारीयल खाँ और बैगन मल के साथ आ पहुँचा। नारीयल खाँ और बैगन मल ने दोनों अपराधियों को पकड़ लिया। उधर करैली शौहर करैला को बुलाया। मूली न्यायलय में बड़बड़ाती हुई पहुँची। श्री गाजर मल के सामने मामला पेश हुआ। एक तरफ मीर

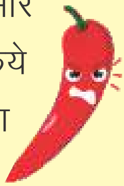

शलगम खाँ और दूसरी तरफ से पुदीना मल वकील नियुक्त किये गये। अदालत में मिर्ची देवी ने इतनी तेज गवाही दी कि आम का मुख पीला पड़ गया। छिलके आम साहेब को खड़े होने को कहा तो उसके मुख से एक भी शब्द नहीं निकला, तो मौलवी शरीफा खाँ शरारत दिखाते हुए कटघरे में आ कर खड़े हो गये । उसके बाद

खीरा सिंह, संतरा देवी, मौसमी खाँ आदि छिलके आम को देखकर सुस्त पड़ गये। यह देखकर गाजर मल हँस पड़ा तथा छिलके आम साहेब को जेल भेज दिया गया।

रिया कुमार, वर्ग 4

# 8. रानी की मजबूरी, घर की जिम्मेदारी

एक गांव में एक होटल था। उस होटल में रानी नाम की एक लड़की काम करती थी, रानी के पिताजी का नाम नरेश था और माता जी का नाम ललीता था। रानी के पिताजी हर समय शराब पीकर सोए रहता था। होटल का मालिक बहुत गुस्से वाला था। रानी थोड़ा सा भी आराम करती तो होटल मालिक रानी को बहुत डाँटता था, रानी को कहता था कि जल्दी से काम कर नहीं को पगार काट लूंगा। तो रानी कहती, मालिक नहीं! पगार नहीं काटीयेगा, नहीं तो मुझे और मम्मी को पापा बहुत मारेंगे और खाना भी नहीं खाने देंगे। ऐसे ही दिन बीतते गए। एक दिन उस होटल में एक आदमी खाना खाने आया।

रानी एक ग्लास में पानी पी रही थी। तो वह पानी का ग्लास गिर गया, तो होटल मालिक ने उसे एक तमाचा मारा। वह आदमी जो खाना खा रहा था, उसने रानी को बुलाकर उससे पूछा कि तुम इस होटल में काम क्यूँ कर रही हो? तो रानी ने बताया कि मेरे पिताजी शराब पीकर घर में सोए रहते हैं, और जब शराब के लिए पैसे नहीं होते हैं, तो पिताजी माँ को मारते हैं। अगर माँ पैसा नहीं देती है तो पिताजी मुझे काम करने के लिए होटल में भेज देते हैं। उस आदमी ने पूछा, तुम पढ़ने जाती हो? रानी ने कहा, मैं पढ़ने नहीं जाती हूँ। तब उस आदमी ने कहा रूको, मैं कुछ करता हूँ। उस आदमी ने तुरंत 1098 पर कॉल किया और पुलिस आई और रानी के पिताजी को और होटल मालिक को पकड़कर जेल भेजवा दिया।

रंजन कुमार, गांव– कुरकरी पटना

वर्ग – 7

# 9. सामाजिक सहभागिता

यह कहानी समाजिक सहभागिता पर आधरित है, जैसा कि आप कहानी शिर्षक के माध्यम से जान चुके होंगे। इस कहानी में मुख्य रूप से दर्शाया गया है कि किस तरह समाज की सहभागिता में बड़े से बड़े घटना टालने की क्षमता है।

यह कहानी लगभग चार वर्ष पहले की है। बिहार प्रांत के छोटे से गाँव नीरपुर की है। यहाँ पर अंकित नाम का लड़का था। वह माँ और पापा के सभी बातों को नकारता रहता था। वह अन्य चीजों में अधिक समय देता था, इसलिए वह पढ़ाई में बहुत कमजोर था। दिन भर अपने दोस्तों के साथ घूमना और फिजुल काम करना, उसका दिन भर का काम था। एक दिन की बात है, गांव के बच्चों के साथ, गांव के बगल के पोखर में बिना अपनी मां या किसी बड़े को बताए ही मछली मारने चला गया।

शाम को कुछ ऐसी खबर आती है जो अंकित के माता–पिता को सन्न कर देती है। उनके बेटा घायल हो गया है। गांव वालों का कहना था कि मारपीट करने वाले किसी और व्यक्ति को मार रहा था, मगर गलती से यह शिकार हो गया है। यह घटना सुनते ही अंकित के माता–पिता तुरंत घटना स्थल पर पहुंचते हैं और अंकित को पास के अस्पताल में भर्ती कराते हैं। मगर वहां से उसे दूसरे प्राईवेट अस्पताल जाना पड़ा। इस कारण वहाँ पर पैसे की अधिक जरूरत थी। अंकित के माता–पिता काफी परेशान हो गये। मगर गाँव वालों के सहयोग से

अंकित को प्राईवेट अस्पताल में भर्ती कर देते हैं। सभी ग्रामीण चंदा इकट्ठा करते हैं और अंकित की इलाज करवाते हैं। एक महीने के भीतर अंकित स्वस्थ हो जाता है।

इस कहानी का स्पष्ट संदेश यह है कि अगर सभी लोग एक साथ किसी भी समस्या का मिलकर हल करें तो, समस्या कुछ भी नहीं है।

धर्मेन्द्र कुमार, जिला–खगड़िया
वर्ग – 8

# 10. कविता

बादल आया बादल आया,
पानी खूब बरसाते आया,
मछली, मेढक सबको भाया,
जिसमें सबने खूब नहाया।
नदी आई, पानी आया
प्यासी धरती को भी खूब भाया।

बादल आया, पानी आया,
छम–छम छाता लेकर निकले हम,
फिसल गया पैर, गिर गये धम से हम।।

रौशनी कुमारी, वर्ग–6, मधेपुरा

# 11. डर

**सच्ची घटना**

मैं पुतुल कुमारी, वर्ग–7। मैं एक घटने के बारे में बताती हूँ। मेरे गांव में एक 7 साल का बच्चा डूबते–डूबते बच गया था। उसके बारे में बता रही हूँ। वह बच्चा स्कूल नहीं जाना चाहता था, और उसके माता–पिता उसको पढ़ाना चाहते थे और वह स्कूल जाता लेकिन रास्ते में इधर–उधर छुप जाता। एक दिन उसकी माँ उसे स्कूल जाने वाले रास्ते में छोड़ कर घर चली गई और वह बच्चा फिर से इधर–उधर नहर किनारे छुप गया। उस दिन पानी अधिक होने कारण बच्चे का पैर फिसल गया और वह पानी में डूबने लगा। ठीक उसी वक्त गाँव के बच्चों ने हल्ला कर लागों को बुलाया तो गांव वालों ने बच्चों की शोर सुनकर वहाँ पहुँचे और उसे बचायें। उस बच्चे की डूबने की खबर गाँव में आग की तरह फैल गयी। उसकी माँ और भाई–बहन भी खबर सुनकर गाँव वालों के साथ दौड़ते हुए वहाँ पहुँचे। बच्चे को पानी से निकाला गया। देर होने के कारण बच्चे को हॉस्पीटल में भर्ती कराया गया। उसके पिता को यह खबर सुनकर चक्कर आने लगा, तब गाँव वालों ने उनको सांत्वना दिया कि अभी बच्चा हॉस्पीटल में है घबड़ाने की जरूरत नहीं। कुछ घण्टों बाद बच्चा ठीक होकर वापस अपने घर आ गया। यह घटना गाँव वालों और आस–पास में काफी चर्चा का विषय बन गया।

सभी गाँव वाले अब अपने बच्चों को स्कूल तक छोड़ते हैं और प्यार तथा दुलार से पढ़ाना ही तय किया, न कि डरा कर।

पुतुल कुमारी, वर्ग– 7, जिला– समस्तीपुर

# 12. बच्चों ने की बाल विवाह रोकने की पहल

माधुरी कुमारी, उम्र 13 वर्ष, पिता–भूटो ऋषिदेव, माता–तेतरी देवी, ग्राम– परसा पोस्ट–मेला, थाना–ग्वालपाड़ा, जिला–मधेपुरा की रहने वाली है। वह अपने भाई–बहन में दूसरे स्थान पर है। वह वर्ग 6 में पढ़ रही है, तथा अम्बेदकर प्रेरणा दल की सदस्य है। जब अम्बेडकर प्रेरणा दल के सदस्यों के लिए बाल अधिकार विषय पर प्रशिक्षण दिये जा रहे थे, सब बच्चों ने माधुरी की शादी की बात पर ग्रुप में चर्चा किया। उसी समय माधुरी की शादी के लिए लड़का खोजा जा रहा था। उसके बाद चांदनी कुमारी, रोशन कुमार, बबीता कुमारी तथा संजन कुमारी जो अम्बेडकर प्रेरणा दल के अध्यक्ष तथा सचिव है, नवज्योति समाजिक केन्द्र में कंचन कुमारी के पास फोन कर माधुरी की शादी के बारे में जानकारी दी। उसके बाद कंचन कुमारी व एनिमेटर काजल मुर्मू की सहायता से बच्चों ने माधुरी कुमारी के माता–पिता तथा गांव के अभिभावकों के साथ बैठक की। बाल विवाह के बारे में जानकारी दी तथा उससे होने वाले दुष्परिणामों के बारे में भी बताये। चांदनी कुमारी स्थानीय अम्बेडकर प्रेरणा दल के अध्यक्ष है। सभी बच्चों ने मिलकर 1098 पर फोन किये एवं माधुरी कुमारी की शादी के बारे में जानकारी दिया एवं जल्द ही सहायता भेजवाने की मांग किया। पुलिस प्रशासन ने बिना देर किये पहूँचा और माधुरी की माता–पिता को अच्छी तरह समझाये। इस कारण माधुरी की शादी रूक गई।

**निष्कर्ष**– रोशन कुमार, चांदनी कुमारी एवं बबीता कुमारी इन सब बच्चों ने अपनी अहम भूमिका निभाई है माधुरी की शादी को रोकने में। इसके बाद गांव के लोग एवं माधुरी के माता–पिता ने यह निर्णय लिया कि वह अपनी बेटी की शादी 18 वर्ष पूरी होने पर ही करेगें।

# 13. कहानी सफलता की (सुनीति)

## एक सुनीति की कहानी बनीं सभी बच्चों के लिए आदर्श मधेपुरा

नोहन हासंदा की बेटी सुनीति कुमारी, उनकी माँ का नाम सरिता सोरेन है, जो शाहपुर संथाली टोला, ब्लॉक ग्वालपाड़ा, जिला मधेपुरा की रहने वाली है। वह सरकारी स्कूल शाहपुर में 5वीं कक्षा की छात्रा थी। उनके पिता एक किसान है जबकि मां खेती का काम करती है और गृहिणी है। उसका एक भाई और 3 बहनें हैं।

सुनीति कुमारी ने नवोदय प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की और नवोदय विद्यालय में पढ़ाई शुरू की है। हम सभी उसे उसके भविष्य के लिए आशीर्वाद देते हैं। वह अपने अम्बेडकर प्रेरणा दल की लीडर है और अध्यक्ष की अनुपस्थिति में बैठक का विवरण लिखती है। वह समुदाय की सभी लड़कियों के लिए प्रेरणा है और समुदाय के सभी सदस्य एपीडी समूह की सराहना करते हैं जिन्होंने गांव में सीखने के लिए प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाया। सुनीति के कारण अन्य बच्चों के माता–पिता भी प्रश्नोतरी के प्रति गंभीर हो गए और अपने बच्चों को नियमित रूप से भेजने लगे। वह अभी नवोदय स्कूल में है और 12वीं तक बिना फीस की पढ़ाई करेगी।

सुनीति का परिवार गरीबी रेखा से नीचे है और उनका मुख्य व्यवसाय खेती है। उनके पिता और माँ को उनकी शादी और पढ़ाई के खर्चों की चिंता है। उनके भाई भी स्कूल जाता है। आमतौर पर दो साल पहले जब गाँव में एपीडी शुरू हुई तो बहुत कम बच्चे एक जगह आकर बैठते थे, उनमें से सुनीति भी एक थी। वह दिलचस्पी नहीं लेती थी पर आती थी। वह मछली पकड़ने और कृषि क्षेत्र में काम करने

जाती थी। वह अपने स्कूल में अनियमित थी और अधिकतर अनुपस्थित रहती थी।

लेकिन गांव में बार–बार मीटिंग के दौरान उन्होंने क्विज में हिस्सा लिया और कई बार उन्हें पुरस्कार भी मिला, जिससे उन्हें सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिली। सुनीति की योग्यता बढ़ती गई और वह बहुत गंभीर हो गई और नियमित रूप से स्कूल जाने लगी और नवोदय गाइड पढ़ने लगी। उसके माता–पिता बहुत आशान्वित है। हमारे एनिमेटर ने कई बार प्रश्न हल करने में उसकी मदद की।

उन्होंने बिहार दलित विकास समिति के कई कार्यक्रमों में भी भाग लिया और ज्ञान और प्रेरणा प्राप्त की।

कविता

# 14. थोड़ा पढ़ लिख जाने दो

अभी ब्याहने की जल्दी क्यों,
थोड़ा पढ़–लिख जाने दो।
प्रेम और और ममता की मूर्ति,
पूरी तो गढ़ जाने दो।
अभी खेलने के दिन है इनके,
हुआ न बचपन पूरा है।
स्वपन अभी अधूरा है।
अभी– अभी तो हुआ सवेरा
धुप तनिक चढ़ जाने दो।
अभी ब्याहने की जल्दी क्यों,
थोड़ा पढ़–लिख जाने दो।

संकलन

सागर कुमार, वर्ग –5, जिला–मुजफ्फरपुर

# 15. बंधुआ मजदूरी से शिक्षा तक....

मैं भुल्लू सदाय का बेटा नीतीश कुमार हूँ। हम तीन भाई हैं। मैं बीच में हूँ। मैं दरभंगा जिले के बहादुरपुर प्रखंड के परारी स्थित राजावन टोले में रहता हूँ। मैं कक्षा 7वीं का छात्र हूँ।

नीतीश कहता है, मैं बिहार दलित विकास समिति, पटना द्वारा संचालित अंबेडकर प्रेरणा दल से जुड़ा हूँ, और शिक्षित होकर एक सफल नागरिक बनना चाहता हूँ। लेकिन मेरे पिता एक दिहाड़ी मजदूर थे और दैनिक आधार पर काम न मिलने के कारण परिवार को बहुत सारी समस्याओं की सामना करना पड़ रहा था। इसके कारण, वह कहता है, कुछ लोगों और एक ठेकेदार ने हमें लालच दिया, इसलिए मैंने 2 बार पढ़ाई छोड़ दी और काम करने के लिए अपने राज्य से बाहर चला गया था। वहां मुझे दिन में 12 घंटे से ज्यादा काम करना पड़ता था और वादे के मुताबिक वेतन भी नहीं दिया जाता था। समय पर खाना नहीं मिलने से मैं बीमार हो गया, मेरे पिता मुझे वापस ले आए और इलाज कराये।

जब मैं घर वापस आया तो बी.डी.वी.एस. स्वयंसेवक एक बैठक कर रहे थें। में वहां गया और परिचय प्राप्त किया। जब मैंने अपनी समस्याएं रखीं, तो शिक्षक ने हमें बच्चों के अधिकारों के बारे में बताया और मुझे आगे आने के लिए प्रेरित किया। शिक्षक ने 6 अन्य बच्चों के साथ हमारा दाखिला सरकारी स्कूल में कराया और हमारे माता–पिता को भी सलाह दी। वह कहता है, अब मेरे पिता मुझे स्कूल भेजते हैं और ट्यूशन भी। इससे मुझे पढ़ने और आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। अब मैं 7वीं कक्षा का छात्र हूँ, मैंने 5वीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। मैं बिहार दलित विकास समिति के सभी स्वयंसेवकों और उसके संयोजकों को दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आप सभी हम बच्चों के लिए इस तरह का कार्यक्रम कर रहे हैं।

# 16. शिक्षा

सुधा कुमारी 6वीं कक्षा की छात्रा थी जब वह ए.पी.डी. समूह में शामिल हुई तब एनिमेटर ने उनके गांव में बैठक आयोजित की। वह मांझी समुदाय से है और उनमें से एक भी बच्चा स्कूल नहीं जा रहा था, जबकि स्कूल में उनका नामांकन कराया गया था। घर या समुदाय में पढ़ाई का कोई माहौल नहीं था। बच्चें अधिकतर अपने माता–पिता के साथ कृषि कार्य और दैनिक मजदूरी में संलग्न थे। उनमें से बहुत कम लोग बैठक में भाग ले रहे थे।

उनमें से एक सुधा अकेली लड़की थी जो स्वस्थ थी और सामुदायिक स्थिति को समझ सकती थी। वह बाल अधिकार और नेतृत्व के प्रशिक्षण के लिए बी.डी.वी.एस. आई थीं। वह बाल अधिकार, शिक्षा, अंबेडकर के मूल्यों और 6 संकल्पों की बातें जानती थीं। वह एपीडी के सभी सदस्यों को बुलाकर बैठक में भाग लेने लगी। अब एपीडी में 15 सदस्य हैं, लेकिन वह केवल 9वीं कक्षा में होने के कारण सदस्य नहीं बन पाने के बावजूद ए.पी.डी. का पूरा समर्थन कर रही है। वह गांव में अपने ए.पी.डी. की सचिव थी।

अब वह समुदाय में लीडर (Neta) के रूप में जानी जाती है और स्कूल के लिए बच्चों की नियमित निगरानी करती है। वह शाम के समय सेल्फ स्टडी करती है और कक्षा 4 से 5 तक के छोटे बच्चों को भी पढ़ाती है। समुदाय में उसके व्यवहारों का सभी बच्चे आदर और सम्मान करते हैं।

सुधा कहती है कि चंदन सर ने मुझे जीवन में कुछ करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है, वे शिक्षा के अधिकार और महत्व पर पढ़ाते और प्रशिक्षण देते हैं।

सुधा कुमारी, गंजपर, पटना

## 17. कविता

# बाल मजदूरी

रोटी के खातिर देखो बच्चा करता मजदूरी है।
यह कठोर अभिशाप झेलने की कैसी मजबूरी है।
पूँजीवाद के खूनी स्याही से यह लिखी कहानी है,
नौनहालों के अरमानों पर नित दिन फिरता पानी है।
जो अपने बच्चों के खातिर, खुशियों के बीनते ताने।
अरमानों की ज्योति जगाने को, नित गिनते तारे।
वही दूसरे के बच्चों से जब अपनी सेवा लेता है।
माता के वात्सल्य प्रेम को मानो गाली देता है।
मैं यह समाज का अभिशाप मिटाने आया हूँ,
दबे हुए अरमानो में पंख लगाने आया हूँ।

संकलन
आकाश कुमार, वर्ग–7,
जिला– मुजफ्फरपुर

सरिका सोरेन, मधेपुरा

# 18. कठिन परिश्रम रंग लाई

डोली मुर्मू 14 वर्ष, पिता–शकलदेव मुर्मू, ग्राम–शाहपुर संथाली टोला, पोस्ट–शाहपुर, थाना–ग्वालपाड़ा, जिला– मधेपुरा की रहने वाली है, जो **APD** में वर्ष 2020 से जुड़ी है। पहले वह उतना पढ़ने में रूची नहीं लेती थी। धीरे–धीरे उसमें परिवर्तन हुआ। उसमें समझ विकसीत हुई। पढ़ाई के प्रति जागरूकता आई। उसने रोज स्कूल जाना शुरू किया, पढ़ाई में रूची और कठिन परिश्रम करने लगी। उसकी मेहनत रंग लाई और वह 2022 में अपने विद्यालय में **'बेस्ट स्टूडेन्ट ऑफ दि ईयर'** का पुरस्कार प्राप्त की। उन्हें पूरे स्कूल में सम्मानित किया गया, जो हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है। वर्ष 2023 में उसने नवोदय प्रतियोगिता परिक्षा पास की और आगे की पढ़ाई के लिए नवोदय विद्यालय में पढ़ने चली गयी।

## कविता

### आगे तुमको बढ़ना है !

दूर बहुत है जाना, आगे भी तो है बढ़ना
खेल–खेल में पढ़ना है, ऊँचाई भी तो है चढ़ना ।
तुम्हारी कोशिशें सदा हो लाजवाब
यही हमसब की है तमन्ना
आसमान को छू लो तुम जब
खुशी मिलेगी हम सब को तब।
जब जय जयकार होगी हर ओर तुम्हारी
साकार करो तब जीवन को तुम अपना।
दिल से तुम हर काम करो
देखो न पीछे मुड़ कर तुम
आगे बढ़ना है काम तुम्हारा।

*साक्षी कुमारी, वर्ग-6, खगड़िया*

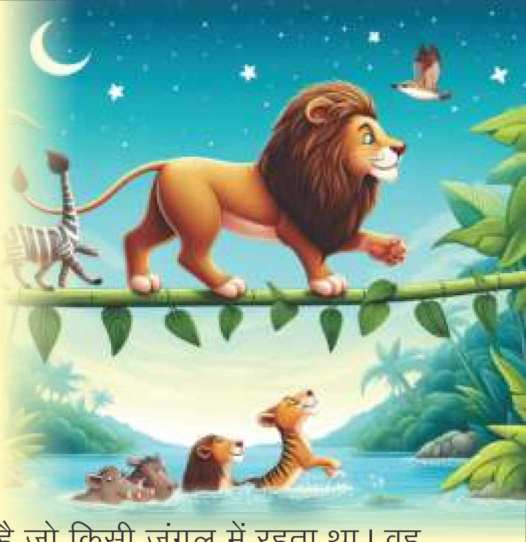

# 20. नेता की अगुआई

कोई भी गाँव, जिला, राज्य और देश में नेता जरूर होते हैं। उसी प्रकार हमने भी एक कहानी लिखी है जो बताता है कि नेता किस तरह प्रतिनिधित्व करता है, कितना ईमानदार है, सहनशील है, एवं बुद्मिान है। यह कहानी एक शेर की है जो किसी जंगल में रहता था। वह अपने 'जनता' पर अच्छा नेतृत्व करता था। एक दिन शेर को अपनी मंत्री और दल को लेकर नदी पार करना था। वह एक पेड़ के तने के सहारे पार करना चाहता था। राजा ने कहा? मै पहले करके आता हूँ ताकि देख लूँ ताना मजबूत है कि नहीं। अकेला शेर ज्यादा भारी नहीं होने के कारण तना टूटा नहीं और आसानी से पार हो गया। उसे लगा कि अब सभी लोग पार कर जाएंगे। फिर शेर और मंत्री दल के लोग धीरे–धीरे उस पार चलने लगें तभी शेर ने जोर से आवाज दिया– जल्दी पीछे जाओ, और सभी लोग पीछे लौट गए तभी तना टूट गया। इस प्रकार शेर ने अपने दल के लोगों की जान बचाई।

सोना मुर्म, वर्ग–7, जिला–मधेपुरा

# 21. सफलता की एक कदम

खगड़िया जिला के सूदूर देहात में एक गाँव है।जो चन्हा नदी के किनारे बसा हुआ है। इस नदी से हर साल जान–माल एवं लागों की जिन्दगी तबाह होती है। यह गाँव रमुनिया नाम से जाना जाता हैं। इस गाँव में विशेषकर मांझी समुदाय के लोग रहा करते है। इस समुदाय में लड़कियों की शिक्षा को लेकर गलत धारना बनी हुई है, और उन्हें शिक्षा से वंचित रखते है।

वैसे ही एक सच्ची कहानी है, जो और लड़कियों के लिए प्रेरणा का पात्र बन गई है। उस लड़की ने अपनी सच्ची आप बीती बात बताती है कि मेरा नाम अहिल्या कुमारी है, और मेरे पिता का नाम श्री जगदीश सदा, ग्राम–रमुनिया, थाना–ओलापुर, गंगौर, जिला खगड़िया की रहने वाली हूँ। मैं 2020 में सरकारी स्कूल ओलापुर में नामांकन करवाया था। किन्तु मैं कभी भी स्कूल नहीं गई, न ही घर में पढ़ती थी। सबसे बड़ी विडम्बना यह थी कि मैं अपना नाम तक नहीं लिख पाती थी। उस समय मेरे गाँव में बच्चों को पढ़ाने के लिए के.डी. भी. एस. संस्था के द्वारा केन्द्र खोला गया। मैं उस केन्द्र पर पढ़ने जाने लगी, और मेरे अन्दर पढ़ने की इच्छा बढ़ी और मैं मेहनत करने लगी। शिक्षक के सहयोग से मेरा नाम नौवीं वर्ग में जलकौरा उच्च विद्यालय में लिखवा दिया। मैं मेहनत करने लगी। रोज स्कूल तथा एच.आर.सी. सेन्टर में पढ़ने लगी। मैं दो बार पन्द्रह दिवसीय प्रशिक्षण के लिए बिहार दलित विकास समिति, पटना गई, और हमें हमेशा आगे बढ़ने के लिए वे प्रेरित करते रहे। उन लोगों से प्रभावित होकर मैं मैट्रिक की फार्म भर दी और 2022 में मैट्रिक द्वितीय श्रेणी से पास कर गई। आज मैं 11वीं में नाम लिखवाकर पढ़ रही हूँ, जो और सब लड़कियों के लिए सीखने की प्रेरणा देती है। गरीब होने के बावजूद मेरे मन के अन्दर इच्छाशक्ति है जिसके कारण मैं सफलता पाने में कामयाब हुई हूँ। यह मेरे लिए बहुत ही गौरव की बात है कि मैं हर परिस्थिति से लड़कर आगे बढ़ती हूँ। घर की लाचारी एवं काम का बोझ सहकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती चली और सफलता की कहानी गढ़ डाली हूँ। मैं शिक्षिका बनकर समाज की और लड़कियों को भी शिक्षित करना चाहती हूँ।

अहिल्या कुमारी, जिला खगड़िया

एच.आर.सी.

बाल अधिकार महोत्सव - 2022
WE LOVE
पुस्तक विमोचन कार्यक्रम
"The Rights of Dalit Children in Bihar"
दलित बच्चों के अधिकारों पर एक अध्ययन
काम नही
कलम पकड़ाएँ

# 2024

## January

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | **24** | 25 | **26** | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

बालिका दिवस
गणतंत्र दिवस

## February

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | **28** | 29 | | |

विश्व विज्ञान दिवस

## March

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | **8** | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | **22** | **23** |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

बिहार दिवस, जल दिवस
शहीद दिवस, महिला दिवस

## April

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | **1** | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| **14** | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

शिक्षा दिवस
अम्बेडकर जयंती

## May

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **1** | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

मजदूर दिवस

## June

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | **14** | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

बाल मजदूर निषेध दिवस

## July

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

## August

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | **15** | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

स्वतंत्रता दिवस

## September

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | **5** | 6 | 7 |
| **8** | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

शिक्षक दिवस
साक्षरता दिवस

## October

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | **2** | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | **11** | 12 |
| 13 | 14 | **15** | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

महात्मा गाँधी जयंती
अन्तराष्ट्रीय बालिका दिवस
विश्व हाथ धुलाई दिवस

## November

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | **14** | 15 | 16 |
| 17 | 18 | **19** | **20** | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

बाल दिवस
विश्व स्वाच्छता दिवस
बाल अधिकार दिवस

## December

| SUN | MON | TUE | WED | THU | FRI | SAT |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **1** | 2 | 3 | 4 | 5 | **6** | 7 |
| 8 | 9 | **10** | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

एड्स दिवस अम्बेडकर निर्माण दिवस
अंतराष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस

# बाल कल्याण समिति

## बालकों की देख–रेख और संरक्षण के लिए

KINDER MISSION WERK